राजाई वा ऊँच पद पाने मे डिफीक्लटी खास किसमे है? (शिव बाबा को याद करने मे) और भी कोई बतावेंगे? (कोई डिफीक्लटी नही है) पुरुषार्थ की डिफीक्लटी लगती है? (नही) मुख्य याद की ही डिफीक्लटी है। और सबको ही है। इस डिफीक्लटी से कोई भी जरा भी छूटा हुआ नही है। सबसे जास्ती डिफीक्लटी यह है। देही-अभिमानी पूरा नही बन सक्ते है। देह-अभिमान बहुत आता है। कोई को किस प्रकार की डिफीक्लटी है कोई को किस प्रकार की। इसको भी माया कहा जाता है। कोई सर्विस भी नही करते है तो देह अभिमान ही कहेंगे। तो नजदीक बाप से मिल नही सक्ते। अर्थात विजय माला मे नजदीक आ नही सक्ते। विजय माला मे नजदीक वो ही आवेंगे तो जो कि बहुतो का कल्याण करेंगे। जो याद करेंगे और औरो को भी करावेंगे। सारी दुनियां चाहती है कि हम भगवान साथ जाकर मिले। परन्तु उनको पता नही कि बाप क्या चीज है। इसलिये ही नो समझते है नो ही जाकर मिल सक्ते है। जितना हो सके ऊँच विजय माला मे पिरोये जाने लिये पुरुषार्थ करना चाहिये। बाकी विजय माला मे तो बहुत ही आ जाते है। सबसे जास्ती जीवन सफल उनका है जो औरो का जीवन सफल बनावे। दो पांच की सर्विस करना कोई सर्विस नही है। यहां तो हजारो की लाखो की सर्विस करनी है। करोड़ो को रास्ता बताना है। सबको बताना चाहिये कि सतयुगी दैवी स्वराज्य आपका जन्म सिद्ध अधिकार है होवनहार विनाश से पहले।

रूहानी बाप दादा। अच्छा मीठे-2 सिकीलधे सपूत आज्ञाकारी होवनहार ब्रह्म देवताओं प्रति बाप दादा का याद प्यार ओम

13-4-67:- रात्री क्लास:- कहां-2 से चक्र खाये आकर मिले हो। जब कि ईश्वर से अथवा बाप और दादा
* * *** * *********
इनके फिर तुम साथ रहते हो तो कहेंगे सब से जास्ती तुम सौभाग्यशाली हो। क्यो कि साथ मे रहते हो। दूसरे तो बाहर मे दूर रहते है। सेन्टर्स पर जाने वाले भी अपने-2 घर मे रहते है। सेन्टर्स वाले तो सदा भी बहुत समाचार बाहर के सुनते है। तुम तो यहां और कुछ भी नही सुनते हो। तो सभी कहेंगे कि सदा सौभाग्यशाली तो यह है। साथ रहते है परन्तु बरसते नही है वो कहेंगे हम बरसते है। अब सौभाग्यशाली कौन? जो जास्ती बरसते है वो बहुतो को परफुल्लित करते है। है भी बहुत सहज। बाहर वाले जो प्रदर्शनी मे आते है उनकी बुधी मे बैठता ही नही है। भक्ति मार्ग का हुसाब भरा हुआ है। वो निकले और ज्ञान मे आवे सो तो कल्प पहले वाले ही होंगे। बहुत तो ऐसे भी होंगे जो यूं ही चक्र लगा कर भी चले जाते होंगे। सुना परन्तु मगज मे कुछ ना बैठा। ऐसे भी चक्र लगाते है। कोई सुनते भी है। आगे चल कर वो भी आवेंगे। जिसका जिस समय बाप से वर्सा लेने का मुहूर्त निकलता है वो उस समय ही आते है। आखरीन तो जरूर आवेंगे। जब बहुत हो जावेंगे तब समझेंगे कि यहां कुछ है। फिर कोशिश करके आवेंगे। ड्रामा बड़ा महीन है। जिस समय जिसके भाग्य मे होगा उस समय ही तीर लगेगा। सुनते-2 आखरीन मे कुछ समझ आ जाती है। ऐसे बच्चों के पत्र व्यवहार आते है। कोई को कोशिश होती है बाप के पास आने की कोई को नही होती है। कोशिश हुई तो समझो सौभाग्यशाली बाप के पास आकर कुछ न कुछ लेकर जावेंगे रिफ्रेश होकर जावेंगे। भल गरीब हो परन्तु सर्विस कुल हो तो सेन्टर की तरफ से भी मिल जाता है। भल यह भी सम्मुख होकर आवे। मन्दिरो मे भी दूर-2 कितने जाते है। यात्रा करने जाते है। मूर्ति तो घर मे भी रख सक्ते है फिर भी दूर क्यो जाते है? बद्रीनाथ भी जाते है वहां पर भी तो शिव का चित्र ही है। एक ही शिव के कितने नाम रख कर मन्दिर बनाये है। चीज एक ही है। इनको ही कहा जाता है भक्ति के धक्के। यह है बिलकुल नई बात। आगे चल कर बहुत राजो का पता पड़ेगा? आखरीन मे भी राजाई मिलती कैसे है। विनाश भी देखेंगे। बच्चों को खुशी भी होनी चाहिये। हम शान्ति धाम से होकर फिर सुखधाम मे जावेंगे। बार-2 यही खयाल अन्दर मे आवे कि अब हमको घर जाना है। अब चक्र पूरा होता है। 84 जन्म पूरे हुये है फिर अब जाते है घर। फिर हम अपनी राजधानी मे जावेंगे। आगे चल कर क्या फेर फार होता है वो भी सब साक्षात्कार हो जावेगा। यह तो जरूर है जो होंगे सो देखेंगे। किसीका शरीर पर भरोसा नही है। कोई भी अनय हो कोई भी समय मे जा सक्ते है। कहेंगे ड्रामा। यह जाकर कुछ कल्याण करेंगे। कल्याणकारी

कल्याणकारी की मुहर तुम पर लगी हुई है। इसलिये ही गाया हुआ है ईश्वर कल्याण कारी है। तुम
समझते नही हो। तुम बच्चे जानते हो बाप क्या कल्याण आकर करते है। विनाश के लिये यह लड़ाई रखी है।
जरूर बाप वर्सा देने आये है। विनाश होगा सभी शान्ति धाम में चले जावेंगे। फिर वहाँ से आते जावेंगे।
बहुत करके पूछते है कि ऐम आब्जेक्ट क्या है। बोलो यह है राजयोग की ऐम आब्जेक्ट। भगवान राजयोग सिखा
रहे है। कहेंगे भगवान कौन है। क्या गीता के भगवान ने राजयोग नही सिखाया था। तुम समझते हो कृष्ण
यहाँ हो नही सकता है। उसी नाम रूप में फिर यहाँ कैसे आ सकता है। उनको वो ही शरीर तब मिले जब
सतयुग में आवे। इस समय कृष्ण का रूप हो नही सकता। भगवान और कोई साधारण तन में आता है।
अपना परिचय और सृष्टी की आद मध्य अन्त की नालेज और कोई परमात्मा के सिवाय दे नही सकते है।
जबसमझाते हो तो पहले-2 ओपीनियन इस एक बात पर लिखनी है। कायदे सिर लिखवाते नही है। यह नही
**********************
लिखवाते कि हमने ब्र, कु, से निश्चय किया है कि गीता का भगवान रचता पुनर्जन्म रहित परमपिता
परमात्मा है। नो कि रचना कृष्ण। कृष्ण से लेकर सब मनुष्य ही मनुष्य है। भगवान तो निराकार को
जाता है। उनका ऐडाप्ट किया हुआ साधारण तन ब्रह्मा है। ब्र, कु, कु, बहुत है नो। शिव बाबा ने ह.
ऐडाप्ट किया है इनको। इन दवारा समझाते है। ऐसे-2 बात समझानी चाहिये। बाबा जानते है समझाते
समय भूल जाते है। मुख्य बात है भगवान की। इस लिये निकाला है गीता का भगवान कौन? भगवान
सच्ची ही बताते है। भगवान है ही दूंथ। बाप ने बताया है तब तो हम समझाते है। भारत 5000 वर्ष
पहले स्वर्ग था। अभी तक मनुष्य यादकरते आते है। तुमको मालूम है हम जितना पढ़ेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे
अपने आप ही अपने लिये शिव बाबा से प्राईज लेते हो। अपने पुरूषार्थ से सब कुछ पाते हो। हर एक अपनी
कमाई करते है 21 जन्मों के लिये। हमारा पार्ट अच्छा है। ऊँच पद वाले खुश होते है नो। तुमको अपने
ही ज्ञान और योग से सतयुगी राजधानी का हिस्सा लेना चाहिये। वो दादे की प्रापर्टी के हकदार रहते है।
************************
सबको बराबर-2 मिलता है। यहाँ हर एक को अपना ही पुरूषार्थ करना है। बाप को याद करना है और
* ***** *********** **************** * ********** ****
स्वदर्शन चक्र को फिराना है। अच्छा मीठे-2 बच्चों का गुड नाईट
* ********%
डायरेक्शनस,:%— 1:—कोई भी सेन्टर से मधुबन आवे तो वो 15 दिन पहले ही अपना पूरा समचार अपने
**** * ***
पूरे आक्यूपेशन सहित देवे कि कौन-2 कितने दिनो के लिये आ रहे है। कोई अपवित्र को मधुबन में नो
आना है।

2:—हर एक अपने-2 समान वजन करवा कर पीछे गाड़ी पर चढ़ावे। रास्ते में दण्ड पड़ने पर ब्राहम्णों का
नाम बदनाम होता है। ऐसा कोई प्रकार का अयोग्य कार्य करना ब्राहम्णो के लिये उचित नही है।

3:—आजकल ट्रेन और बस में काफी भीड़ रहती है। इसलिय मधुबन में जो भी पार्टी आवे वो आबू रोड
पर ही उतने समय वापस जाने के दिन के लिये अपनी सीटस रिजर्व करवा देवे और माउंट आबू
पर भी बड़ी दीदी को भी वापस जाने की ता० बता देवे। तो बस की रिजर्वेशन पहले से ही
करवा ली जावेगी।

4:—जो भी पार्टी मधुबन आवे वो देहली और जयपुर को इतलाह करके आवे ताकि जो कोई चीज उनको देनी
हो वो देसके।

5:—मधुबन से जो कुछ पोस्ट सेन्टर्स पर जाते है तो कोई-2 सेन्टर्स वाले अपनी टिकट बचाने के लिये
उसी मधुबन वाले लिफाफे में ही कोई मुरली डाल कर फिर दूसरी तरफ रिडायरेक्ट करते है। बाबा कहे
यह ऐसा कर्म रांग है। ऐसा कार्य कोई भी सेन्टर वालो को नो करना है।

समाप्त समाप्त